रविवार, दिनाँक 30-04-2023 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

सजनों समय की गति को देखते हुए अब अविलम्ब समझदार बनने की आवश्यकता है। जानो अब के बाद थोड़ी सी लपरवाही भी खतरनाक साबित हो सकती है। अतः मानो कि अब वह समय आ गया है जब हमें अपने मन-वचन-कर्म पर इतनी चेतनता से वांछित अधिकार रखने की आवश्यकता है कि वह क्षण भर के लिए भी त्रेता, द्वापर व कलुकाल के अनुसार कुछ न करे। ऐसा इसलिए क्योंकि त्रेता, द्वापर व कलुकाल में धर्म क्रमशः तीन, दो व एक चरण पर होता है। सो आधे अधूरे ज्ञान से हमने ऊपर उठना है। ऊपर उठने का अर्थ है - ख़्याल को मनुराज से निकालकर ऊपर गगनमण्डल में स्थिर कर देना ताकि जो कुछ भी जीवन व्यवहार के दौरान सुसंस्कृत मानव बनने के लिए प्राप्त हो, वह कुदरत की वाणी यानि कुदरती ज्ञान के सिवाय और कुछ न हो। सजनों यही समय की माँग है कि हर मानव चरित्रवान व सुन्दर बनने हेतु अपने अन्तर व बाह्य व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लाए। इस सन्दर्भ में हो सकता है कि अब के बाद आपको किसी प्रकार की कोई चेतावनी न मिले क्योंकि कुदरत अनेक प्रकारों से कलुकालवासियों को सचेतन अवस्था में आ तथा अपने यथार्थ धर्म को सत्यता से पहचान उसे धारण करने वाला धर्मधारी बनने का आवाहन दे चुकी है। सो यह अपने आप में सत्-वादी बन व एकता, एक अवस्था में आ धर्मपरायणता अनुसार अपने कर्त्तव्यों का सहर्ष अकर्त्ता भाव से निर्वहन करने में सक्षम बनने की मंगलकारी बात है। इस सक्षमता को ग्रहण करने वाला ही निर्विकारिता से जीवन यापन कर सकता है। अब यह तो आप जानते ही हो कि निर्विकारी कौन है? - जानो निर्विकारी वह परमात्मा ही है जिसकी शक्ति द्वारा कुदरत इस ब्रह्माण्ड की रचना करने में सक्षम है। हमें इस रचना को परिपूर्णतया जानने, समझने के लिए यानि उसकी सार को पाकर कुदरत प्रदत्त वेद-शास्त्रों में विदित नीति-नियमों के अनुसार विचरने के लिए योग्यता प्राप्त करनी होगी। इस हेतु निःसन्देह चाहे जितने ही संसारी विकारों व संकल्पों ने हमें क्यों न घेरा हुआ हो, हमें उन तमाम बन्धनों से आज़ाद होकर अपने घर में स्थित होना होगा। आप, हम, सब सजन ऐसा करने में दक्ष हों, उसके लिए सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्तियाँ सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में परिपूर्णतया विदित हैं। यही युक्तियाँ हमारे जीवन को यानि मन-वचन-कर्म को सकारात्मकता में ढालने का सुदृढ़ आधार हैं। इस आधार को मज़बूत करने पर ही हम अपने यथार्थ गुण, शक्ति व हस्ती को पहचान सकते हैं और उनका सकारात्मकता से समभाव-समदृष्टि के सबक़ अनुसार जीवन के हर कदम पर प्रयोग

करते हुए व परमार्थ के रास्ते पर आगे बढ़ते हुए मोक्ष प्राप्ति में सफल हो सकते हैं। इस सत्य को हमें मानना व स्वीकारना होगा तभी हम इस सत्य को मान्यता यानि सम्मान देकर व इस पर स्थिरता से बने रहकर अपना दिलो-जान इस पर कुर्बान करने के लिए तत्पर रह पाएँगे। आशय यह है कि धर्म पर स्थिरता से बने रहने के लिए आप भी अपना तन-मन-धन वारने से कदचित् सकुचाना नहीं। इस हेतु समभाव को अनमोल मानना और इसके वर्त-वर्ताव द्वारा धर्मधारी बन अपना तो उपकार करना ही करना, साथ ही साथ परोपकार भी कमाना। फिर सजनों जो भी जीवन में सोचना, बोलना व करना वह सब सकारात्मक हो। फिर सजनता के प्रतीक बन जाना। ठीक है जी?

'हाँ जी'।

इस सन्दर्भ में जिस किसी को भी इस आवाहन के प्रति न्यौछावर होने में कष्ट हो तो समझो कि वह अपना व अपनों का तथा कुल समाज का सबसे बड़ा वैरी है। ऐसा सजन न तो परस्पर सजनता का व्यवहार कर सकता है और न ही परस्पर बतचीत के दौरान सजनता दर्शा सकता है। जानो सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होते हुए आज यही कमज़ोरी उनके वचनों की उल्लंघना करने की व समस्त दुःखों को प्राप्त होने का कारण है। यहाँ तक कि इस कमज़ोरी के वशीभूत हुए हम इन्सान ऐसे भ्रमित अवस्था में चले गये हैं कि अब इससे उबरकर जीवन-विजयी होना हमारे वश की बात ही नहीं रही, तभी तो हम हारकर बैठे हुए हैं। जानो जो हारकर बैठ जाता है वह कभी भी विजय प्राप्ति का मन्त्र समझना व सीखना ही नहीं चाहता। आशय यह है कि ऐसा इन्सान इतना हताश हो जाता है कि वह हताशा अन्दरूनी व बैहरूनी वृत्ति में दुःख का कारण बन जाती है। यहाँ सजनों जानो कि दुःख खरीदना व दुःख बाँटना, यह मानव धर्म के विरुद्ध है। यह विरुद्ध चलन जब इन्सान अपना लेता है तो समाज, जातियाँ, देश सब एक-दूसरे के प्रतिद्वन्द्वी बन जाते हैं और हर पल भय का वातावरण सबको सताता रहता है। यह भय कई कारणों से यानि संसारी धन की कमी से, शारीरिक अस्वस्थता के कारण या फिर स्वाभाविक कुरीतियों के कारण आता है। इसके कुप्रभाववश निराशाजनक वातावरण हमारी सोच, बातचीत व व्यवहार में उतरता है। इस तरह यह अन्दर ही अन्दर हमारी बौद्धिक ताकत को कमज़ोर करता जाता है और उस स्थिति में हमारे पास पराधीन होकर जीवन जीने के अतिरिक्त और कोई विकल्प ही नहीं बचता। सजनों यह तो आप सब जानते ही हो

कि जहाँ पराधीनता है वहाँ गले में लगाम पड़ जाती है। अब उस लगाम को हाथ में लेने वाला जहाँ चाहे इन्सान को हाँककर ले जाता है। कई दफा तो वह इस तरह आपको साध लेता है परन्तु यदि कभी सधने के बद आप हठ करते हो यानि नहीं चलते तो जानवरों जैसा आचरण आपके साथ होता है।

इस बात को समझो और विवशता भरा जीवन जीने से बचने के लिए होश में आ जाओ और अपनी बुद्धि टिकाणे ले आओ। यह ही समय की पुकार है। अक्ल टिकाणे लाने के लिए सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ आपके पास है। उस ग्रन्थ का समझदारी से अध्ययन करते हुए उसमें विदित विचारों को न केवल धारण करो अपितु उनका जो आनन्द प्रदायक सुखद प्रयोगात्मक रूप है, उसको व्यवहार में ले आओ ताकि आपस में एकता का, सजनता का माहौल बने और उसके सद्प्रभाव से प्रसन्नचित्त होकर आप अपना ख़्याल ध्यान प्रकाश की ओर अफुरता से जोड़ने में सफल हो जाओ। जानो यही जीवन की सफलता का राज यानि मन्त्र है और इसी के द्वारा आप कुदरत प्रदत्त आत्मिकज्ञान अनुसार जीवन जीने के योग्य बन सकते हो। यह जानने समझने के पश्चात सजनों अब अपना मंगल या अमंगल करना आपके अपने हाथ में है। यहाँ याद रखो कि समझदार वही है जो अपना मंगल करने के लिए अब तक अपनाए संसारी ज्ञान का शोध करता है और इस तरह सत्य का प्रतीक बन जाता है। यह सबको बताना है क्योंकि अगले इतवार से अब श्रेष्ठता व सजनता का प्रतीक बनने हेतु यानि हर इन्सान को जागृति में लाने हेतु ध्यान कक्ष में पुनः क्लास लगनी आरम्भ होने जा रही है। यही नहीं अब जो कुदरती दात/प्रशाद के रूप में आपको यह सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ मिला हुआ है ताकि सब अज्ञान सिमिटकर हृदय प्रकाशित हो जाए यानि शुद्ध ज्ञान प्राप्त हो जाए, उसके लिए भी अब प्रबन्ध होने लगा है। इस सन्दर्भ में सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित शब्द ब्रह्म विचारों व उनके शब्दार्थों को गहराई से समझने की प्रक्रिया शुरु होने लगी है ताकि यह शब्द ब्रह्म विचार आपके जीवन का अर्थ बन जाएँ और जीवन की ताकत बन जाएँ। सो सजनों अब यह क्रिया सुनिश्चित रूप से आपने करनी है। इस क्रिया को केवल अपने तक ही सीमित नहीं रखना अपितु कुल ब्रह्माण्ड को इस समभाव-समदृष्टि के सबक़ की जीवन उद्धारक महत्ता व महत्त्व से परिचित कराना है ताकि सब सतयुग के अनुरूप स्वाभाविक परिवर्तन लाने के लिए तैयार हो जाएँ। सजन भाव यही कहता है कि अपना तो उपकार करो ही, साथ ही साथ परोपकर भी करते जाओ। इसके लिए पहले आपको स्वयं काबिल बनना होगा। बहुत सुन लिया, अब आपने आगे बताने के

योग्य बनना है और फिर उस योग्यता को सबके सम्मुख दर्शाना है ताकि वे सब आपकी शास्त्र-विहित बात को सहर्ष स्वीकारें और इन्सानियत में ढलते जाएँ। ऐसा योग्य बनाने हेतु सजनों दिनाँक १४ मई से यहाँ बात आरम्भ होगी ताकि हर बाल, युवा, प्रौढ़, वृद्ध इस योग्य बने कि - सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ क्या है तथा आज के भयावह वातावरण में इसकी क्या उपयोगिता है? वह इस सत्य से सबको परिचित करा सके। इस मकसद को सिद्ध करने हेतु इस ग्रन्थ की महत्ता व उपयोगिता को जानना व समझना है। याद रखो हमारे पास अपना कुछ नहीं है और न ही होना चाहिए। हमें जो अब तक प्राप्त हुआ है हमें उसपर इतराना नहीं चाहिए क्योंकि इन सब भौतिक पदार्थों की प्राप्ति से हमारी मानसिकता स्थिर व शान्त नहीं रह पाती। शान्त नहीं हो पाती तो हम अशान्त रहते हैं। जानो अशान्त मानसिक अवस्था सबसे बड़ा रोग है। इससे मानव जीवन नकारा हो जाता है। हमारा जीवन ऐसा न हो इसके लिए सजनों हमें स्थिरता व सतर्कता से एक अवस्था में बने रह अपने जीवन लक्ष्य की ओर अखण्डता से बढ़ना है। निःसन्देह इसके लिए हमें अपने ऊपर नियन्त्रण रखना होगा। आत्म-नियन्त्रण भी ऐसा जिसके अन्तर्गत हमारे मन-वचन-कर्म द्वारा कुछ भी ऐसा न हो जो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित मानवीयता के चलन के विपरीत हो। आशय यह है कि हमें सब कुछ सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित आत्मीयता के चलन अनुसार अपनाना है व इस तरह अपने आचार-विचार व व्यवहार द्वारा निष्कलंक स्वरूप का आदर्श स्थापित करना है। जानो यह अपनी उस असली शान को प्राप्त होने की बात है जो कि पीढ़ी-दर-पीढ़ी घटती गई, घटती गई और अन्त हर कदम पर ठोकरें खा रही है। आशय यह है कि आज मन-वचन-कर्म सबमें दिखावा है। मन में दिखावे का प्रतीक संकल्प-विकल्प है, वचन में दिखावे का प्रतीक निन्दा-उस्तत, द्वि-द्वेष है व कर्म में दिखावे का प्रतीक छल-कपट, छीना-झपटी आदि है। जानो सजनों ऐसी स्वाभाविक बनत इन्सान को शोभा नहीं देती क्योंकि इससे उस इन्सान के अन्तर्मन की स्वच्छता समाप्त हो जाती है जो कि अपने आप में आत्म-विस्मृत होने की विनाशकारी बात होती है।

अब जो इन्सान खुद को नहीं जानता वह संसार को कैसे जान सकता है। तभी तो इन भौतिक वैज्ञानिकों की खोज व इनकी बात समय के साथ सदा बदलती रहती है। सजनों हमें इस भौतिक परिवर्तन की तरफ आकर्षित नहीं होना। हमें तो कुदरती साईन्स की हर बनत (कीड़ी से हाथी तक, ब्रह्मा से तृण तक) की इज़्ज़त करनी है और इस तरह सबको सम्मान देते हुए भौ-भ्रम से आज़ाद हो जाना है। अब सजनों आत्म-स्मृति में आने के लिए

दृढ़-संकल्पी हो जाओ यानि आत्मज्ञान को व्यवहार में उतारकर अपने सजन आप बन जाओ। इस हेतु सजनों आपको पता होना चाहिए कि ऐसा बनने के लिए कुदरत ने समयानुकूल क्या साधन बक्षा है? - जानो वह साधन है सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ। सबसे पहले इस साधन का महत्त्व व अर्थ समझो। जानो जब समय कलियुग से सतयुग में प्रवेश कर रहा है तो उस संक्रमण काल में यह कुदरत ने प्रशाद क्यों बक्षा है? सो सजनों सेवन करो इन विचारों का और पवित्रता के प्रतीक बन जाओ ताकि विसूचिका सूचिका बन जाए। आप स्वस्थ हो जाओ, दीर्घ-आयु लाभ प्राप्त करो, चरित्र सच्चरित्र बन जाए यानि काया-कल्प हो जाए। इस लाभ को प्राप्त करने हेतु सजनों आप सभी सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ का क्या अर्थ है उसे जानो। जानो कि जो इस अर्थ को जान गया वह कुदरत के खेल को पहचान जाएगा। फिर सजनों जानो कि आज के भयावह समय में सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ का आना क्या सन्देश देता है? फिर जानो कि इस ब्रह्माण्ड को पुनः ज्ञानमय अवस्था में साधने के लिए इसमें क्या फरमान हैं यानि क्या मार्गदर्शन है? जानो सजनों जो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के विषय में यह सब जान जाएगा और इसमें विदित वचनों को जीवन व्यवहार में ले आएगा वह आत्मोद्धार कर लेगा। अतः सबके लिए बनता है कि वह इस ग्रन्थ को समझे और व्यक्तिगत रूप से सबको यह बताने के योग्य बने। इसी के साथ-साथ व्यक्तिगत तौर पर यह भी परखो कि अब तक जो भी, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे से हमको दीक्षा मिली है, क्या हम उसके प्रति पूरी तरह से समर्पित हैं या बेपरवाह हैं?

यहाँ हम स्पष्ट करना चाहते हैं यही बेपरवाही आपको व समाज को बर्बाद कर रही है। इसी कारण अन्दर प्रसन्नता का भाव नहीं पनपता और आप हर क्षण रोते-झुखते रहते हो जो कि मौत की निशानी है। जानो सजन श्री शहनशाह हनुमान जी से तो मौत भी थर-थर काँपती है। इसीलिए जो भी सजन उनकी दीक्षा प्राप्त कर समर्पित रहता है, उसका मौत कुछ नहीं बिगाड़ पाती। आशय यह है कि उसके लिए मौत का कोई अस्तित्व नहीं होता। इस तरह वह अपनी अजर-अमर अवस्था में दृढ़ बना रहता है व मौत उसे छू नहीं पाती। क्यों सजनों जन्म-मरण के खेल की गन्दगी में बार-बार पड़े रहना चाहते हो? ऐसे इन्सानों के विषय में सजनों सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि ''ओ जन्म दे वैरियो, होश सम्भालो और अपने इस चोले की कद्र करो''। इस हेतु सजनों फिर कह रहे हैं कि जानो इस संक्रमण काल में सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के आने का मकसद क्या है? आखिर कुदरत क्या चाहती है? जानो कुदरत चाहती है कि हर जीव को ऐसा मौका प्रदान किया जाए कि वह आत्म-सुधार कर पुनः आत्म-स्मृति में आकर अपने आत्म-स्वरूप को जान व मान ले। ऐसा

बनाने हेतु ही सजनों अब आपकी बुद्धि का इम्तिहान होने जा रहा है। अभी इस इम्तिहान में पन्द्रह दिन बाकी हैं। तब तक विषय को भली-भान्ति जान जाओ और समझने के योग्य बन जाओ। जानो यदि आरम्भ अच्छा व प्रशंसनीय हुआ तो आपका उत्साह बढ़ेगा और अगर आरम्भ यानि आधार ही कमज़ोर हुआ तो एक भी कदम आगे नहीं बढ़ा पाओगे और वहीं के वहीं रह जाओगे। यह होगा, अपनी बनती हुई किस्मत को आप ठोकर मारना। अब चाहे अपनी किस्मत को ठोकर मारो या फिर उसे स्वीकारो, यह आपका अपना निर्णय है। इसके लिए फिर दूसरे को दोष मत देना। इस सन्दर्भ में हम तो यही कहेंगे कि कुदरत ने जो मानव रूप में आपकी श्रेष्ठतम कृति के रूप में बनत बनाई है, उस बनत की महत्ता को स्वीकारो और अपने यथार्थ को जान उसे प्राप्त हो जाओ। यह बात सबने सबको बता देनी है। अब आपकी बौद्धिक शक्ति/अक्ल की समझ आएगी कि आप कितने अक्लमन्द हो। याद रखो बेअक्ल इन्सान ज्यादा फड़ें मारता है। अगर कोई दूसरा उसे समझाने लगे तो उसकी सुनना भी नहीं चाहता क्योंकि वह अहंकार में आ जाता है। इस सन्दर्भ में सच्चेपातशाह जी कहते हैं:-

पास फेल और फ़स्ट दा नतीजा निकलना, ओ नतीजा तुआडे हाथ है।

सो सजनों इस बात को याद रखना। अब ध्यान से भजन सुनोः-

अज्ञान का बादल जो था पड़ा, हटाया महाबीर जी प्यारे ने।

हुण अन्दर बादल कोई नहीं, समझाया महाबीर जी प्यारे ने।।

असां सुत्तियां भुलियाँ दासियां नूं, हुण जगाया महाबीर जी प्यारे ने।

दासियां जन्म जन्म दियां बिछड़ियां नू, रघुनाथ मिलाया महाबीर जी प्यारे ने।।

काम क्रोध लोभ अन्दर कोई नहीं, यह बताया महाबीर जी प्यारे ने।

वैर विरोध हैन बाहर भैणों, झगड़ा मुकाया महाबीर जी प्यारे ने।।

शब्द सुरति दा सी विछोड़ा भैणों, मेल कराया महाबीर जी प्यारे ने।

संसार समुंद्र दे विच भरम रहे, किनारे लाया महाबीर जी प्यारे ने।।

मौत दा दिन रात सी भय नी भैणों, हुण बचाया महाबीर जी प्यारे ने।।

असां भुलियां होईयां दासियां नूं, राह बताया महाबीर जी प्यारे ने।।

रघुनाथ जी दे चरणां दे विच भैणों, हुण बिठाया महाबीर जी प्यारे ने।।

धूप दीप और तिलक भैणां, रघुनाथ जी नूं लवाया महाबीर जी प्यारे ने।।

दासी सदके ते कुरबान जावे, अचरज खेल दिखाया महाबीर जी प्यारे ने।।

अज्ञान का बादल जो था पड़ा, हटाया महाबीर जी प्यारे ने।।

सजनों अब समझदार बनने का समय आ गया है। इस भजन में सच्चेपातशाह जौ कहते हैं कि जन्मोपरान्त जितना भी अज्ञान रूप में हमें जगतवासियों से या भिन्न-भिन्न सम्बन्ध रखने वालों से ज्ञान प्राप्त हुआ, उसके कारण अज्ञान रूपी बादल हमारे अन्तःकरण के आगे छा गया। इसी कारण हृदय विदित सत्य आच्छादित हो गया और हम उसे स्पष्टता से देख व समझ नहीं पाए। अब जब सत्य को स्पष्टता से देख ही नहीं पाए तो काम जाग्रत हो गया, क्रोध उत्पन्न हो गया और जीवन व्यवहार में लोभ, मोह, अहंकार का प्रभुत्व छा गया। अब जब सच्चेपातशाह जी ने सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्ति प्रवान की तो उन दयालु ने उन्हें समझाया कि यह काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार अन्दर हमारे साथ नहीं आते तो इसलिए इन्हें मन से हटा दो। कैसे? - सतशास्त्र का विचार करके। वही विचार आपके लिए भी समय अनुकूल सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित हैं। जानो इस ग्रन्थ में आत्मिकज्ञान विदित है। यह आत्मिकज्ञान सुदृढ़ आधार के रूप में प्रदान कर उन सर्वमहान दाता ने सच्चेपातशाह जी को साध दिया और साथ-साथ उन्हें बताते चले गये कि विषय-विकार हमारे अन्दर नहीं होते इसलिए इनसे ऊपर उठते जाओ। सच्चेपातशाह जी भी उनकी आज्ञा का पालन करते हुए स्वाभाविक तौर पर उनसे ऊपर उठते गये और उनका उपचार होता गया। इस तरह उनकी मानसिक स्थिति यथार्थता में तबदील हो गई यानि धीरे-धीरे उनको पता चल गया कि जीवन की और जीव, जगत व ब्रह्म की यथार्थता क्या है? इस तरह अज्ञान का बादल छँटता गया, छँटता गया और सत्य सीधा प्रकाशित हो गया। जानो सजनों जब इस प्रकार सत्य हृदय के अन्दर प्रकाशित हो जाता है तो इन्सान, इन्सान नहीं रहता अपितु परमात्म स्वरूप हो जाता है और फिर उसी यथार्थ परमात्म स्वरूप में बने रहते हुए वह इस जगत में निष्पाप विचरता है।

यहाँ सजनों जानो कि बड़े-बड़े ऋषि-मुनि जिस ''काम'' पर बड़ी कठिनता से फतह पाते हैं, इस युक्ति द्वारा सहज ही यह कार्य सिद्ध हो जाता है और सजन ब्रह्मज्ञान प्राप्त कर ब्रह्म नाल ब्रह्म हो जाता है। सच्चेपातशाह जी ने भी इस सर्वमहान युक्ति को प्रवान किया और ब्रह्ममय होकर इस जगत में विचरने का पुरुषार्थ दर्शाया। इस तरह उन्होंने आत्म-नियन्त्रण रखते हुए भिन्न-भिन्न तरीकों से जगतवासियों को आत्म-विकास करने की प्रेरणा प्रदान की और सबको ब्रह्ममय होकर इस जगत में निर्लिप्तता से विचरने का पुरुषार्थ दिखाने का आवाहन दिया। इस सन्दर्भ में हम पूछते हैं कि आपको, हम को कितने साल हो गये इस द्वारे से जुड़े हुए? क्या हम यह कर पाए?

'मौन'।

तो फिर सजनों जो बीत गई सो बीत गई, हमें अपनी भूल को स्वीकारना है अन्यथा इस भूल के कारण जो परिस्थितियाँ आजीवन आपको परेशान करती रही, वे आपको आगे भी सताती रहेंगी। उन परिस्थितियों से उबरने के लिए अपने घर लौट आओ। कहते हैं न कि ''सुबह का भूला अगर साँझ को घर लौट आए तो उसे भूला नहीं कहते'' उसी तरह आपको भी अपनी भूल स्वीकार कर आत्मोद्धार के मार्ग पर आगे बढ़ना है व आत्म-स्मृति में आना है। सजनों फिर कह रहे हैं कि अब आप भी लौटकर अपने घर में आ जाओ और फिर शान से इस संसार में निर्लिप्तता से विचरते हुए, अपने कर्त्तव्यों का सहर्ष निर्वहन करते हुए शास्त्र-विहित युक्तियों अनुसार अपनी सुरत को आत्म-स्वरूप में स्थित कर लो यानि हर पल जो आत्मा में परमात्मा है, वह आपके दृष्टिगोचर रहे। जानो ऐसा करने से ब्रह्मज्ञान आपका अपना हो जाएगा। जब ब्रह्मज्ञान हमारा है तो हम भी ब्रह्म तुम भी ब्रह्म, ब्रह्म है ब्रह्माण्ड सारा। जानो यहाँ आकर बाल अवस्था के सब मन-गढ़ंत भक्ति-भाव समाप्त हो जाते हैं और युवा अवस्था आ जाती है। सजनों जब किसी इन्सान की मानसिकता युवा अवस्था में आ जाती है तो वह इन्सान समभाव-समदृष्टि के सबक़ अनुकूल सजनता का प्रतीक बन जाता है और उसके अन्दर ''सर्व-सर्व एक ही आत्मा है'' यह भाव प्रबल हो जाता है। यह भाव प्रबल होने पर समझो सम अवस्था आ जाती है और जीवन का वास्तविक आनन्द प्राप्त हो जाता है। यही आनन्द परमानन्द में तबदील होता है और जीव मोक्ष पा परमधाम पहुँच विश्राम को पाता है यानि प्रकाश नाल प्रकाश हो जाता है। आप भी इस प्रकाशमय अवस्था में स्थित होने हेतु अब ध्यान से इस कीर्तन को सुनोः-

चौपाई

तूं पिच्छे कदम ना हटावीं। ऐसा पुरुषार्थ कमावीं।।

हुन तूं अगे कदम बढ़ावीं। तूं ऐसा उद्यम दिखावीं।।

उमरा चरणां विच बितावीं। तूं रज मस्तक नूं लावीं।।

ओ ओझड़ हिन बहुतेरे। ओ चोभां देवन जेहड़े।।

ओन्हां विच अटक न जावीं। तूं पिच्छे कदम ना हटावीं।।

विसूचिका ओ पई डरावे। ओ कष्ट कलेश दिखावे।।

ओदे फंदे तों बच के राहवीं। तूं पिच्छे कदम ना हटावीं।।

हंकारी ऐसी गर्ज दिखावे। दासियां दा दिल कम्ब जावे।।

जीव नूं ताकत दे विच लियावीं। तूं पिच्छे कदम ना हटावीं।।

जेहड़े हैन ए तेरे प्यारे। ओ फांसी लई खड़े हिन सारे।।

तूं फांसी विच न फस जावीं। तूं पिच्छे कदम ना हटावीं।।

महाबीर जी ने ए फ़रमाया। दासी ने तुहानूं खोल सुनाया।।

महाबीर जी दे चरणां विच राहवीं। तूं पिच्छे कदम ना हटावीं।।

सदके मैं सारी ओ सारी। सोहणी तेरी सूरत तों।।

वारी मै वारी ओ वारी। प्यारी तेरी मूरत तों।।

सोहणी तेरी सूरत तों। मन मोहनी तेरी मूरत तों।।

पंजां तत्तां नूं वारां। सोहणी तेरी सूरत तों।।

सजनों इस कीर्तन द्वारा कितनी सरलता और सहजता से कलुकालवासियों को सीधे रास्ते पर लाने हेतु सत्य बात बताने का उद्यम दिखाया गया है। यह अपने आप में संसार में उलझे हुए इन्सानों को सावधान करते हुए पुनः आत्मिकज्ञान प्राप्त कर परमार्थ के रास्ते पर आगे बढ़ने का प्रोत्साहन देने की बात है। इस प्रोत्साहन द्वारा सजनों इस संसार में मानव चोला धारकर इन्सानों को परम अर्थ सिद्ध करने का सुझाव देते हुए कहा जा रहा है कि निषंग होकर परमार्थ के रास्ते पर आगे बढ़ो और रास्ते में आने वाली परेशानियों व नकारात्मक भाव स्वभाव वाले इन्सानों का आधिपत्य मत स्वीकारो। आशय यह है कि अहंकारी स्वभाव वाले इन्सानों से भयभीत होकर अपने यथार्थ गुणों का त्याग मत करो अपितु उन पर सुदृढ़ता से बने रहो क्योंकि यदि ऐसा पुरुषार्थ दिखाने में सफल हो गये तो उनकी अक्ल अपने आप टिकाणे आ जाएगी। इसके विपरीत यदि इनके प्रभाव में आकर आप उलझ गए तो जितने भी संसारी हैं वे सब आपको अपने अधीन करते जाएँगे। सो ऐसा स्वाभाविक परिवर्तन जो मानव के लिए धारण करने योग्य नहीं है वह किसी भी लोभ या भयवश होकर नहीं स्वीकारना क्योंकि मानव होने के नाते मानव-धर्म में बने रहने में ही शान है। अतः याद रखो कि कीड़ी से लेकर हाथी तक व ब्रह्मा से लेकर तृण तक मेरा कोई भी वैरी-विरोधी या अपना-पराया नहीं है। सब मेरे लिए समरूप हैं यानि मैं सबका और सब मेरे सजन हैं। यह होता है सत्य-धारणा अनुरूप सत्यनिष्ठा से जीवन जीते हुए निष्पाप बने रहना और परोपकार कमाना। यदि एक बार ऐसी धारणा बन गई तो कामी-क्रोधी, जो भी आपके संगी-साथी हैं उनकी अक्ल टिकाणे आ जाएगी और वे शान्त होकर पीछे हट जाएँगे।

इस तरह परम अर्थ की सिद्धि के निमित्त कुदरत आपका साथ देगी और जीवन आसान हो जाएगा यानि सदाचार के रास्ते पर आगे बढ़ना सुगम हो जाएगा। यहाँ सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि मैं सदा उन सजन श्री शहनशाह हनुमान जी का आचरण ही अपनाऊँ जिनका यशोगान युगों-युगान्तरों में है व जो युगों-युगों में युग-परिवर्तन के खेल में सहायक सिद्ध हुए हैं और तद्नुरूप ही सर्वोत्कृष्टता को प्राप्त होकर परमात्मा का सुपुत्र कहलाऊँ। सजनों याद रखो जो परमात्मा का सुपुत्र होता है वह निर्भय होता है और वह खुद को शरीर नहीं अपितु अजर-अमर आत्मा मानते हुए इस जगत में परमात्मा के निर्देशानुसार यानि हुक्मानुसार समर्पित भाव से विचरण करता है। इसी में सजनों उसको सब कुछ प्राप्त हो जाता है। हमें भी नेकी की ओर कदम बढ़ाने के लिए समय की माँग अनुसार स्वाभाविक परिवर्तन करना है और इस हेतु दुराचार, भ्रष्टाचार व व्याभिचार को छोड़कर सदाचार

अपनाना है। ऐसा योग्य इन्सान बनने के लिए भौतिकज्ञान प्राप्ति से अधिक आत्मिकज्ञान प्राप्ति को प्राथमिकता दो ताकि आत्मिकज्ञान का प्रभुत्व हो। जानो ऐसा इन्सान बनने पर आपके लिए इस भौतिक जगत में मानव-धर्म के अनुसार विचरना अति सहज हो जाएगा। सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के रूप में अनमोल आत्मिक ख़जाना प्राप्त होने के नाते हमें तो अपने आप को अमीरों का भी अमीर मानना चाहिए। यहाँ याद रखो कि अमीरी महल-माड़ियों में नहीं है अपितु आत्म-स्मृति यानि ज्ञानमय अवस्था मे आने में है। ऐसे ज्ञानी के आगे संसार हार जाता है। यहाँ निर्णय लो कि हमें संसार से हारना है या विजयी होना है? विजयी होने के लिए संसार से निर्लिप्त होना पड़ेगा अन्यथा लिप्त होने पर मोहपाश में फँस जाओगे। ऐसा न हो इस हेतु विचार करो कि सर्वव्यापक तो भगवान है। तो फिर मोह किसके साथ करूँ यानि जब कोई दूसरा है ही नहीं तो फिर द्वि-भाव से इस जगत में कैसे विचरूँ? इस सन्दर्भ में सदा इस सत्य को याद रखो कि सर्व एकात्मा हैं। जब सर्व एकात्मा हैं तो किसका मोह? सजनों इस बात को समझते हुए मैत्री भाव से इस जगत में विचरो। जानो मित्र अपने मित्र की खुशी के लिए सब न्यौछावर कर देता है। आप भी ईश्वर को मित्र मानकर उसके हुक्म की पालना पर अपना सर्वस्व निछावर कर दो। अब ध्यान से सुनोः-

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

शब्दः-

पुरषार्थ सजनों यत्न करो, ओन्हां इक सवाल समझाया है।

अनेक सवाल छुड़ाये के ओ नगर निवासियो, महाबीर जी पर उपकार दिखाया है।।

श्री रामचन्द्र जी दा प्यारा देखो, कैसी हिम्मत लड़ाई हो।

फ़स्ट निकले सारी नगरी ऊपर, कैसी कीती कमाई हो।।

युग युग फ़स्ट निकलदे आये, फ़स्ट निकलन बलधारी हो।

तेज प्रताप ताकत नूं देखो, कैसे हिन सुखकारी हो।।

कैसियां सुखालियां रीतियां, कैसे सुखाले सवाल हो।

शब्द विचार सौखा है सवाल इन्सानों, हो गए दीन दयाल हो।।

जगदाता साडा फ़स्ट, फ़स्ट निकलो पकड़ो ओन्हां दी चाल हो।

फ़स्ट निकलो ते फेल न होवो, फेल हो के न फिरो गंवार हो।।

उस दाते हनुमान जी दी नगर निवासी करन बढ़ाई हो।

श्री रामचन्द्र जी दी उपमा गा गा, त्रिलोकी है शरणाई हो।।

ध्वनिः-

सजनों फ़स्ट दी करो तैयारी।

फेल जेहड़ा हो गया, ओ उमरा राहवे भिखारी।।

सजनों अगर ध्यान देकर आपने यह कीर्तन सुना हो तो हम मानते हैं कि आपके हृदय में अपने जीवन का परिणाम फ़र्स्ट लेने की उमंग जाग्रत हुई होगी। मतलब यह है कि आप जीवन-विजयी होकर आत्मपद/मोक्ष प्राप्त करना चाहते होंगे। यदि ऐसा ही है तो आपको इस हेतु तैयारी करनी होगी। तैयारी से मतलब है कि इसके लिए आपको पढ़ना भी होगा और समझना भी होगा और उस समझ का प्रयोग करके भी देखना होगा कि इसका परिणाम क्या निकलता है? यह प्रयोग कर्म से भी होता है और बातचीत द्वारा भी होता है। आशय यह है कि आपको जो ज्ञान सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ द्वारा प्राप्त होता है, आपने उसको तो धारण करना ही होता है, साथ ही मन-वचन-कर्म द्वारा उसका प्रयोग भी करना होता है। जानो यदि उसका प्रयोग नहीं करोगे तो जीवन में क्या प्राप्त होगा? तब तो वही होगा जैसे कहा गया हैः-

वस्तु होवे घर विच प्यारे, जीव राहवे विच भुलेखे।

रोशनी अन्दर आप दी, बाहर जंगलां नूं ढूंडन जावन।

आशय यह है कि परिपूर्ण ज्ञान तो हृदय रूपी घर में है और मैं बेपरवाह यानि लापरवाह होकर उसे बाहर खोज रहा हूँ क्योंकि मेरा ख़्याल तो दुनियाँ में उलझा हुआ है। ऐसा न हो इस हेतु सजनों अपने बहिर्मुखी ख़्याल को अन्तर्मुखी करके, जो आत्मिकज्ञान का स्त्रोत है उसके संग जोड़ लो ताकि आपका ख़्याल व दृष्टि दोनों एकता से सत्य को प्राप्त करने में लीन रहें और आप भी सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की तरह भगत शिरोमणि कहला

सको यानि उस सर्वोच्च पद को प्राप्त कर सको। अभी आपने सुना भी है कि चाहे त्रेता था, द्वापर था या कलियुग, युगों-युगों में सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ही फ़र्स्ट निकले और अब भी युग परिवर्तन कर सतवस्तु का राज स्थापित करने का कार्यभार कुदरत ने उन्हीं सर्वमहान को सौंपा है। अब ऐसे में सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होते हुए जीवन विजय प्राप्त करना आपके लिए कहाँ कठिन है? जानो यदि आप सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे की चाल पकड़ लेते हो तो आपके लिए यह कर्य कोई कठिन नहीं। अब युगों का यह खेल कैसे चलता है, इसके बारे में आपको बताते हैं - जानो जब भी सृष्टि का निर्माण होता है व जब तक परमेश्वर का राज स्थापित रहता है, तब तक का समयकाल सतयुग यानि सत्य का राज कहलाता है। उस युग में तरह-तरह के मन-गढ़ंत ज्ञान जगह-जगह पर नहीं चलते। यह बिगड़ाव तो बाद में पैदा होता है। कलियुग में तो ऐसा मन-गढ़ंत ज्ञान जगह-जगह पर बाँटा जा रहा है। इसीलिए किसी की श्रद्धा किसी ज्ञान के प्रति है तो किसी की किसी अन्य ज्ञान के प्रति। यही टकराव का कारण है और इसीलिए एक दूसरे से आगे निकलने की व अपना प्रभुत्व जामाने की होड़ लगी हुई है। इसी कारण आज सृष्टि विनाश की ओर बढ़ रही है। पर इस विनाशकाल को हम एक मूक दृष्टा की तरह नहीं देख सकते। हमें इस परिस्थिति में बदलाव लाने का यत्न दिखाकर परमात्मा का सुपुत्र कहलाना है। ऐसा योग्य बनने के लिए हमें सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की जो विशेष प्रकृति या स्वभाव है, उसको पकड़ना है। ऐसा अब शीघ्रतया करना इसलिए भी जरूरी है क्योंकि सतयुग आने वाला है। ख़्याल को यानि सुरत को सत्य में प्रवेश कराने हेतु सत्य का प्रतीक बनना होगा अन्यथा कलियुग के साथ ही दुःखद दग्ध-भस्म अवस्था को प्राप्त हो जाओगे। अब खुद ही बताओ कि इस दुःख को कौन खरीदता है? क्षणभंगुर सुखों में उलझने वाला बेपरवाह इन्सान खुद इस दुःख को खरीदता है क्योंकि वह इन सुखों को ही अपना सब कुछ मानकर उन्हीं में बना रहना चाहता है। सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होने के नाते सजनों ऐसी भूल कदापि न करना। ठीक है जी?

''हाँ जी''।

तो फिर ज्ञात हो कि सतयुग में पूरे ब्रह्माण्ड में ईश्वर का एकछत्र राज होता है। परन्तु जब स्वभावों में तबदीली होने के कारण यानि संकल्प के उपजने के कारण ''काम'' जाग्रत हो

जाता है तो युग-परिवर्तन हो जाता है क्योंकि इस ''काम'' के जाग्रत होते ही इन्सान की सोच, उसका स्वभाव, वचन, क्रिया आदि सब में बदलाव आना शुरु हो जाता है। इस बदलाव के कारण ही युग-परिवर्तन होता है और त्रेता युग आ जाता है। अब त्रेता युग में भी जिसने सृष्टि की रचना की है, वह परमेश्वर खुद अवतार धारकर आते हैं और उनके साथी उनके संग रहते हैं। यह है उस ईश्वर की महानता, अटलता व निर्भयता। निषंग होकर ही वह परमेश्वर फिर धर्म-स्थापना हेतु द्वापर में कृष्ण रूप में व कलियुग में दस पातशाह रूप में आते हैं और हर युग में उनके संग सजन श्री शहनशाह हनुमान जी रहते हैं। सजनों अब भी जो युग परिवर्तन का जो यह कार्य होना है, वह उन्हीं के बुद्धिबल द्वारा सम्पन्न होना है क्योंकि वही सबसे श्रेष्ठ, सबसे विद्वान, सबसे गुणवान, सबसे बलवान, सबसे धनवान, सबसे बुद्धिमान व सारी दुनियाँ में ज्ञानवान हैं। उन्हीं द्वारा प्रदत्त ज्ञान अपनाने से ही हम स्वाभविक उत्कृष्टता को प्राप्त हो सकते हैं। जानो मन-गढ़ंत ज्ञान द्वारा स्वाभाविक परिवर्तन लाना असम्भव है। इस मन-गढ़ंत ज्ञान ने ही आज दुनियाँ को उलझा रखा है व भरमा रखा है। यहाँ तक कि इन्सान इस अज्ञान में फँसकर अपनी वास्तविकता ही भूल गया है। इससे बड़ा धोखा और क्या होगा? आपको ऐसे इन्सानों के छल में नहीं आना। इसीलिए इस द्वारे पर ''शब्द है गुरु, शरीर नहीं है'', यह प्रथा है। यहाँ कोई बड़ा-छोटा नहीं है यानि सर्व एकात्मा का दर्शन है। फिर कह रहे हैं कि इस बात को याद रखते हुए आपने किसी के छल में नहीं आना अन्यथा भटक जाओगे और अलग-थलग पड़ जाओगे। ऐसा होने पर आपको कोई नहीं पूछेगा क्योंकि तब आपकी कोई कीमत ही नहीं रहेगी और आपको हर तरफ से ठोकरें ही ठोकरें प्राप्त होंगी। सो हम तो यही कहेंगे कि अपने यथार्थ अस्तित्व को जानो व पहचानो और तद्नुरूप ही आत्मिक गुणों के अनुसार इस जगत में निर्लिप्तता से विचरने के योग्य बन कर्मफल से मुक्त/आज़ाद हो जाओ व जन्म की बाजी जीत जाओ। यह है परमधाम पहुँच विश्राम को पाना। विश्राम अवस्था को पाने हेतु अब दृढ़ संकल्पी हो जाओ क्योंकि अब अगले हफ्ते से एक अलग ढँग से आपको जीवन बनाने का मौका मिलने जा रहा है। केवल आपको ही नहीं अपितु कुल संसार तक इस सन्देश को अब पहुँचाने की व्यवस्था की जा रही है ताकि इसका लाभ सब तक पहुँचे। इस व्यवस्था को सुचारु ढँग से चलाने के लिए हर सजन का इसमें सहयोग देना बनता है क्योंकि यह मानव जाति के पतनोन्मुख अवस्था से उबर पुनः नैतिक बनने की बात है, यह कुछ वैसा प्रयास है। हम कहते हैं कि दिल खोलकर जो भी समर्थ हो, जिसमें भी बुद्धिबल है, शारीरिक बल है, वह इस महान कार्य की सिद्धि में अपना योगदान देने से न सकुचाओ और अपने आप आगे बढ़ जाओ। बाल हो, युवा हो, प्रौढ़ हो या वृद्ध हो, किसी ने भी नहीं

सकुचाना अपितु सबने आगे आना है। अपने साथ-साथ अपने परिवार के सजनों को भी इसके प्रति उत्साहित करो और उन्हें भी इस महान कार्य में अपना योगदान देने के लिए प्रवृत्त करो ताकि वैश्विक स्तर पर मानव जाति का कल्याण हो और इस संसार में पुनः एकता और शान्ति का वातावरण स्थापित हो जाए। ऐसा वातावरण स्थापित होने पर जानते हो क्या होगा? - भारत माता हर्षा उठेगी। अब यह तो सब स्वीकारोगे ही कि जिसके गर्भ से बाहर आये व रूप-स्वरूप मिला, उसका तहे-दिल से आदर-सत्कार करना हमारा फ़र्ज बनता है। आप इस बात को मानते हो?

''हाँ जी''।

तो फिर बोलोः-

भारत माता की जय , भारत माता की जय, भारत माता की जय

अब सजनों जब जय का बिगुल बजाया है तो कमज़ोर मत पड़ना। दिन-रात चौबीस घन्टे अब आपको इस कार्य की सिद्धि के प्रति समर्पित रहना है और इस हेतु दिल से काम करना है। किसी ने भी यह काम ''मैं'' भाव से नहीं करना। किसी के भी अन्दर किसी को तोड़कर अपना प्रभुत्व जमाने की भावना नहीं आनी चाहिए। अब संसारी कामों के साथ-साथ सबके अन्दर सतवस्तु के ज्ञान को प्राप्तकर उसको आत्मसात करने की इच्छा जागनी चाहिए। सतवस्तु के विषय में जानोगे तभी तो सबको बताने के योग्य बन पाओगे। अतः सजनों इस कार्य के प्रति मज़बूती लो कि मैं आज और अभी से परमार्थ के रास्ते पर आगे बढ़ते हुए व उस पर स्थिरता से बने रहते हुए आत्म-विजयी होऊँगा। यहाँ मान लो कि जब भी कोई परमार्थ के रास्ते पर बढ़ने के लिए कदम बढ़ाने लगता है तो सर्वप्रथम उसके लिए आत्म-निरीक्षण करना बनता है यानि वह परखे कि मैं परमार्थ के रास्ते से कितना दूर हूँ और भौतिक संसार में कितना उलझा हुआ हूँ? इस तरह आपने भी अपनी जाँच करनी है और देखना है कि इस उलझन से आज़ाद होकर जीवन का यथार्थ पथगामी बनने की योग्यता धारण रखने के लिए मुझे क्या करना है? इस हेतु किन-किन नकारात्मक भाव-स्वभावों को कुर्बान करने की आवश्यकता है? जानो यदि इस प्रकार की त्याग-भावना से आगे बढ़ोगे तो ही सफल हो पाओगे और अगर ऐसे ही बिना सोचे-समझे आगे बढ़ जाओगे तो दो कदम भी नहीं चल पाओगे। आपके पास समय है विचार करने का और अपनी त्याग-भावना को जाग्रत करने का। संकल्प लो कि अब के बाद काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपी जो पाँच लुटेरे हैं, आप उनके प्रभाव में आकर न बुरा सोचोगे, न बुरा बोलगे

और न ही किसी का बुरा करोगे। अन्य शब्दों में जो भी सोचोगे, बोलोगे व करोगे, वह समभाव-समदृष्टि के सबक़ अनुकूल ही करोगे। जैसा कि कहा भी गया हैः-

समभाव समदृष्टि के प्रतिकूल न चलियो

सजनों यदि यह त्याग दिखा पाए तो समझ लेना कि आपका काम बन जाएगा। इस सन्दर्भ में भूत को यानि जो पीछे धार रखा था, वह छोड़ देना है और वर्तमान में ही अपना आपा बनाकर सतयुग यानि सुनहरी युग में प्रवेश की तैयारी करना। ठान लो कि हमें वर्तमान में जीना है और वर्तमान में जो ज्ञान या भाव-स्वभाव मिलने वाले हैं उन्हीं को मज़बूत बनाना है। इस मज़बती में भूतकाल बिल्कुल विस्मृत हो जाए और वर्तमान सदा याद रहे। जानो ऐसा करने पर ही भविष्य उज्ज्वल हो पाएगा। यह कार्य बड़े तरीके से करना है क्योंकि जल्दबाज़ी में या जोश में आकर कुछ नहीं होने वाला। सो पूरी तैयारी करके कदम परमार्थ की ओर बढ़ाना। ठीक है?

''हाँ जी''।

तो फिर 'सजनों फ़र्स्ट दी करो तैयारी'। फ़र्स्ट की तैयारी शुरु कर दी तो फिर पीछे मुड़कर मत देखना और न ही अपने विगत स्वाभाविक रूप से प्रभावित होना। आशय यह है कि बुरा त्याग दिया तो त्याग दिया यानि छोड़ दिया और जो संसार का था उसे दे दिया। जानो ये विकार पराई वस्तु है। अब जब मुझे अपनी वस्तु यानि आत्मिकज्ञान मिलने जा रहा है तो मैंने उसका इस्तेमाल करना है। याद रखो पराई वस्तु कभी साथ नहीं जाती न ही उसे साथ ले जाने का कोई विधान है। वह वस्तु तो यहीं की यहीं रह जानी है। साथ तो केवल अपनी वस्तु ही जाएगी। यह बात समझते हुए सजनों पराई वस्तु का मोह त्याग देना। ऐसा सुनिश्चित करने से यकदम अफुर अवस्था में आ जाओगे और जो आत्मिकज्ञान प्राप्त होगा वह अन्दर ठहरेगा। जब यह ज्ञान अन्दर ठहर गया तो फिर उसका प्रयोग करने में आसानी होगी और प्रयोग द्वारा उसका परिणाम अच्छा निकलेगा। इस तरह हमारा मन प्रसन्न रहने लगेगा और हम एकाग्रचित्त होकर अपने स्वरूप में ठहर जाएँगे। फिर सजनों आगे बढ़ने का जोश आएगा। यह होश में आने की बात है। होश में आकर आगे बढ़ो। बढ़ो कह दिया तो बढ जाओ और सफल होवो। याद रखना इस विजय को प्राप्त करने के लिए बलिदान यानि कुर्बानी का मादा चाहिए। सो सहर्ष सर्वहित की खातिर इस बलिदान को स्वीकारो और आगे बढ़ जाओ। इस सन्दर्भ में शास्त्र भी कह रहा हैः-

जैं कुर्बानी दिखायी, अटल राजधानी पायी

सजनों आज की सारी बात को स्मृति में रखना है और हर जगह पर स्थापित महाबीर सत्संग सभाओं के सदस्यों को यह बात बतानी है, क्या?

सबने अब सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ क्या है, इसकी महत्ता व उपयोगिता क्या है, इसको समझने का पुरुषार्थ दिखानाहै। जानो ऐसा करने से आपके अन्दर एक उत्साह व लगाव बनेगा और सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित आचार-व्यवहार की आपको समझ आएगी। समझ आएगी तो उसे धारणे की व वर्त-वर्ताव में लाने की दिलचस्पी पैदा होगी। ऐसा होगा तो ही सफलता मिलेगी। अब यह भी आप जानते ही हो कि सतयुग में युगो-युगान्तरों से आये सब ग्रन्थ शान्त हो जाते हैं। सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में जो ज्ञान विदित है, यदि हम भी उस सत्य बात को धारणकर सत्य के प्रतीक बन जाते हैं तो फिर हमें भी कहीं से कुछ प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं रहती और हम आत्म-निर्भर बन जाते हैं। जानो आत्मज्ञानी ही आत्म-निर्भर हो सकता है। आत्मज्ञानी को किसी ग्रन्थ के अध्ययन की आवश्यकता नहीं रहती। सतयुग में सभी आत्मज्ञानी होते हैं इसीलिए तब किसी ग्रन्थ की आवश्यकता नहीं रहती। यह सब खेल-खिलारा तो त्रेता से आरम्भ होकर कलियुग तक चलता है। फिर जब सब एकमतत्ता के प्रतीक बन जाते हैं और सबके हृदय में सत्य प्रगट हो जाता है तो ''मैं-तूँ'' का अज्ञान मिट जाता है। अन्त में सजनों समयकाल जिस तरफ बढ़ रहा है, वैसी ही तैयारी करने के लिए हमें खुद पर मज़बूती से अंकुश रखना है और किसी कारण भी इसके प्रति कमज़ोर नहीं पड़ना। हम तो यही कहेंगे कि पुरुषार्थ दिखाकर अपने व अपने परिवार के सजन बनना और जन्म की बाजी जीत लेना।

आप ऐसा करने में कामयाब हों, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।